Quarterly/Multilingual Year 2016 JULY-SEP VOL-III ISSUE-III

ISSN No. 2349-4069

SATPUDA RESEARCH JOURNAL(SRJ)

(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY MODE)

A Peer Reviewed and Referred Journal

Devoted to

*** Mal-Nutrition Campaign**

(A step against Mal-Nutrition)*

DIRECTOR : DR. SHARAD SUNDARAM

Visit us on : www.satpudarj.com

Mail us to : srjournal14@gmail.com

Botany / Chemistry / Commerce / Computer Science / Economics / Education / English / Geography / Gujrati / Hindi / History / Journalism / Law / Philosophy / Physical Education / Physics / Psychology / Management / Marathi / Mathematics / Medical Science / Meditation / Music / Political Science / Sanskrit / Sociology / Zoology

Satpuda Research Journal ISSN No. 2349-4069 Year-2016 April - June. Vol-III, Issue-II

** I N D E X **

क्रं	शोध पत्र एवं शोधकर्ता का नाम	पृष्ठ क्रं
1.	अनुसूचित जनजाति की राजनैतिक जागरूकता : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन *'डॉ. नीरज गुप्ता	1
2.	अमर शहीदों के चारण – कविवर श्रीकृष्ण सरल * डॉ. एम.एस. चौहान	3
3.	Consequence of food deprivation on dry matter utilization, shell and cocoon weight and fecundity of ultivoltine sile moth Bobyx mori * Hemant Saxena, **S.M. Jain	5
4.	Mobile Learning: An ICT wireframe to ODL system * Dr. Kaushal Sharma, ** Dr. Jai Prakas	11
5.	आर्थिक विकास एवं आर्थिक वृद्धि * विनोद अड़लक	17
6.	Impact of Population Change on Agricultural Development * Dr. M Imran Khan	19
7.	बुंदेली के समर्पित साहित्यकार : डॉ. रामनारायण शर्मा *लोकेश कुमार नरवरे	21
8.	महिला शिक्षा की प्रासंगिकता (आधुनिक संदर्भ में) * प्रो० गजराज सिंह मर्सकोले	23
9.	बैतूल जिले में कृषि विकास एवं पोषण स्तर का भौगोलिक अध्ययन * डॉ.प्रताप सिंह राजपूत	25
10.	समग्र व एकात्म विश्वदृष्टि का प्रतीक है योग * श्रीमती मंजरी अवस्थी	27
11.	भाषा व्याकरण में संकल्पना प्राप्ति प्रतिमान एवं परंपरागत विधि का उपलब्धि पर तुलनात्मक प्रभाव (कक्षा 9 वीं के संदर्भ में) * डॉ. पी.के. पाटील ** डॉ. ब्रजेश शर्मा *** राजेश खैरवाल	30
12.	जिला सरकार * डॉ. हरीश लोखण्डे	35
13.	बैतूल जिलें की जनसंख्या संरचना एवं पर्यावरण : एक भौगोलिक अध्ययन * डॉ. के. आर. कोसे	36
14.	पंचायती राज्यों में ग्रामीण विकास में महिलाओं की भूमिका * दिनेश सिंह राय	39
15.	भारत में अनुसूचित जातियों (दलितों) की स्थिति और समस्याएँ * अल्पना बागने	42
16.	अमृतलाल नागर के उपन्यासों का सांस्कृतिक पक्ष * रविन्द्र सोनपुरे	47
17.	नागार्जुन के उपन्यास में लोकजीवन * अल्का पाण्डे	52

****

Satpuda Research Journal ISSN No. 2349-4069 Year-2016 July-Sep. Vol-III. Issue-III

बुंदेली के समर्पित साहित्यकार : डॉ. रामनारायण शर्मा

* लोकेश कुमार नरवरे

डॉ. रामनारायण शर्मा अपनी माटी और भाषा के समर्पित साहित्यकार है। बुंदेली मिट्टी की महक और बुंदेली भाषा की मिठास उनके साहित्य की आधारशिला है। डॉ. रामनारायण शर्मा के साहित्यिक प्रतिभा विरासत के रूप में प्राप्त हुई थी। उनका सम्पूर्ण पारिवारिक वातावरण साहित्यिक अभिरूचि का रहा है। वेसे तो उनकी प्रतिभा बहुमुखी है। उन्होंने कविता, निबंध, उपन्यास, नाटक और कहानी आदि विधाओं में लिखा है और उनकी समस्त रचनाएँ साहित्यिक दृष्टिकोण से मूल्यवान है। साहित्यिक दृष्टि से डॉ. रामनारायण शर्मा का कथा साहित्य अत्यधिक महत्वपूर्ण है। डॉ. शर्मा पेशे से अवश्य ही शल्य–चिकित्सक रहे किन्तु उन पर अपने परिवार के साहित्यिक एवं विद्वतापूर्ण वातावरण का प्रभाव अध्ययन काल मे तब उभरा था जब उन्होने काव्य सृजन किया चिकित्यकीय कार्य में निरत रहते हुए भी इस सृजनबेल का आंतरिक पल्लवन होता रहा और सेवा निवृत्ति के पश्चात् सच टुकडा–टुकड़ा रचना से उसका प्रकटन हुआ। यहॉ डॉत्र रामनारायण शर्मा का प्रथम कहानी संकलन है। इस कथा संकलन की समस्त कहानियॉ साहित्यिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

रचनाशीलता की दृष्टि से किसी कहानीकार की प्रथम कहानी आरम्भिक प्रयास होने के कारण प्रायः साहित्यिक निकष पर खरी नहीं उतर पाती, किन्तु शर्मा जी की प्रथम कहानी तृषा भी कहानी के मापदंडों पर सफल सिद्ध होती है। यह कहानीकार के सृजन–कौशल का परिणाम है।

तृषा एक सिद्धान्तमयी महिला थी जिसने जीवन भर तुषार से प्रेम किया किन्तु अंत में तुषार ने उसका साथ नहीं दिया। तृषा ने अपने सिद्धान्त पर अड़ित रहकर कुलपति का उच्च–पद प्राप्त कर लिया। यहॉ तृषा की दृढ़ता, कर्मठता, सहनशीलता आदि गुण व्यक्तिनिष्ठ न होकर समष्टि रूप में समस्त नारी जाति के लिये अनुकरणीय हो जाते है। कहानी का अंत गरिमामय है– एक दिन डाक से उसकी शादी का कार्ड मिला। उसके लिए यह वज्रपात था। वह कुछ दिन हतप्रभ सी बनी रही। आगे की राह दिखाई नहीं दे रहीं थी। सर को पता लग गया था, उनका फोन पर आदेश था – तृषा तुम कल से अपना अधुरा अध्ययन शुरू कर दो।यह मेरा आदेश है। मुझे अंधेरे में प्रकाश दिया। एम. ए. की परीक्षा में प्रथम आई। हिन्दी विभाग में लेक्चरर, फिर रीडर, प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष रही। अभी तो रिटायर हुई मालूम हुआ तुषार शराब, शवाब और लालच के जाल में फसकर नौकरी से निकाल दिया गया तभी फोन की घंटी बचने लगी। सर का फोन था। उन्होंने कहा तृषा तुम्हें आदेश मिला! बधाई हो। उसने पूछा "सर" कैसा आदेश ? और किसकी बधाई ? सहाय, तुम इसी विश्वविद्यालय की उपकुलपति पद के लिए चुन ली गई हो अब मना नहीं करना। कल से मैं जा रहा हूँ। चार्ज आकर ले लेना यह मेरा आदेश है। उसने कृतज्ञता भरे स्वर से कहा – 'सर' आपके आदेश का पालन होगा।

दूसरे दिन कुलपति की कुर्सी पर बैठ कर मैंने नारी की प्रतिष्ठा बढ़ाने में तीस साल पूर्व के संकल्प को पूरा किया था। मेरे मन में केवल एक संकल्प के टूटने की टीस जो अभी तक बाकी थी वो भी आज खत्म हुई। श्रद्धा की विजय हुई, हौठ हिले और शब्द निकले– क्लीव, कायर, कृतघ्न" इस प्रकार कहानीकार ने नारी की इच्छा शक्ति व संकल्प से आगे बढ़ने का सटीक, सरस व सरल वर्णन है।

इस संकलन की कहानी "अंतिम फैसला में लक्ष्मी अपने दाम्पत्य सुख से वंचित होने के कारण आत्म–ग्लानि से भर जाती है। वह अपने पति प्रदीप के पुरूषत्व (पुरूषार्थ) में कमी देखती है जिससे उसे सारे पारिवारिक सुख नाटकीय से प्रतीय होने लगते है। पुरूषत्वहीन पुरूषों के प्रति नारियों में रंच मात्र भी आकर्षण नहीं होता। यह दाम्पत्य का एक सत्य है। इसे किसी भी प्रकार से नकारा नहीं जा सकता है। अंत में लक्ष्मी स्वयं यह निर्णय कर लेती है कि ऐसे पुरूष के साथ रहने का कोई अर्थ नहीं है। उस घर में मैं कभी नहीं जाउगी। घर केवल मिट्टी ईटों से बनी दीवारों को नहीं कहते इसमें रहने वाले पुरूषो–महिलाओं की संवेदना से स्पंदित जगह ही सही निवास हो सकता है। पुरूष में पुरूत्व ही न हो तो वह चलता फिरता ढॉचा मात्र रह जाता है। कहानीकार का यह सार्थक चिंतन सत्यता के बहुत निकट है।

डॉ. रामनारायण शर्मा के सम्पूर्ण कथा साहित्य में समाज के खान–पान, बोली–भाषा, रहन–सहन, आचार–विचार और अध्यात्म चिंतन के विविध आयामों के दृश्य दिखाई देते है। हिन्दी और बुंदेली कहानी संकलनों और उपन्यासों में समाज ही कथा साहित्य की आधार भूमि है। समाज के परिदृश्यों के बिना कथा–साहित्य का सृजन अंसभव है। डॉ. शर्मा के कथा साहित्य में समाज की विविध झॉकिया दृष्टव्य है। उनकी समस्त कथाओ का अनुशीलन सामाजिक दृष्टि से किया जा सकता है शर्मा जी के "सच टुकड़ा–टुकड़ा" कहानी संकलन की इक्कीसवीं कहानी "इस गली के लोग" में समाज के दृश्य देखने योग्य है– "बस्ती में सभी वर्ग और पेशों के लोग रहते है इसमें कुछ कच्चे तो कुछ पक्के मकान है कुछ झोपड़ियॉ भी बीच में दिखाई देती है। खाली जगह पाकर जो भी आया अपना झोपड़ा बना यहीं बस गया। झोपड़ी से मिट्टी के घर और फिर पक्के मकान भी यहॉ सिर उचा किए खड़े है। बस्ती में घुसते ही रामचरण मेट का घर है। वह पास ही सरकारी सड़क के कार्य पर